एक अनूठे कवि जयशंकर प्रसाद

डॉ ममिता सिंह
ए. एम. कॉलेज ,हडपसर
पुणे २८
फोन नं.-0922930493

आज आधुनिक काल की २१ वीं शताब्दी में मानो प्रसाद जी और प्रासंगिक हो चले हैं। उनको जानने का जितना अवसर मिलता है ,ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी आकृति का ताना प्रेम,सौंदर्य ,करुणा ,वेदना और मानवता के रंगों से मिलाकर बनी है। उनकी आत्मा में प्रेम और करुणा बसती थी। तभी तो वे सौंदर्य को देखने - परखने की एक अलग कसौटी रखते थे । इसीलिए उनके काव्य के भाव मानवता , करुणा और आनंद के इर्द-गिर्द घूमते दिखाई देते हैं ।उनकी विधाओं में उनकी साहित्य सृजन की प्रतिभा चमकती हुई दिखाई देती है। वह अपने काव्य सृजन हेतु दिशा का निर्धारण करते थे ,साथ ही संवहन भी । "उनका काव्य केवल सौंदर्य बोधक न बनकर जीवन ,समाज और दर्शन की जटिल समस्याओं को सुलझाने का कार्य करता है । वह छायावाद के एक सफल कवि के रूप में उभरे और उद्भावक युग के नियामक लेकिन सादगी से परिपूर्ण व्यक्तित्व के धनी निकले ।

सन १८८९ में काशी के 'सुंघनी साहू ' परिवार में जन्मे शांत ,गंभीर एवं निश्छल मानवतावादी व्यक्तित्व का ही दूसरा रूप थे प्रसाद जी । उनके काव्य में संस्कृति ,दर्शन ,कल्पना और अनुभूति का नियोजन दिखाई देता है ।उनकी काव्य कृतियाँ इस प्रकार हैं -- चित्राधार ,प्रेमपथिक,करुणालय ,महाराणा का महत्व ,कानन -कुसुम ,झरना ,आंसू ,लहर और कामायनी ।

'चित्राधार' के अंतर्गत पाठक इस बात से अवगत हो सकता है कि उनके काव्य के द्वारा अन्वेषण की एक प्रक्रिया प्राप्त हुई और इसी प्रक्रिया द्वारा चित्राधार में प्रकृति -प्रेम के माध्यम से ,रहस्यानुभूति द्वारा ,भक्ति-भावना ,स्वस्थ श्रृंगार ,मातृभूमि के प्रति विनय,अतीत के प्रति आसक्ति तथा भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था को चित्रित किया है। परम्परा प्रेम भी प्रकट करने से नहीं चूके। उन्होंने एक खोज का मार्ग अपनाया है इसीलिए कभी वह विद्रोह करते हैं अपने नए मार्ग की तलाश में तो कभी अपनी शैली में ही परिवर्तन कर डालते हैं कभी प्रबंधात्मक शैली तो कभी स्वछंद शैली को अपनाकर अपने काव्य द्वारा मार्ग को नया स्वरुप प्रदान करते हैं । शीर्षक को प्रमाणित करता हुआ काव्य चित्र का आधार बन पाठकों को नए अन्वेषण का मार्ग प्रशस्त करता है ।

प्रसाद जी की दूसरी काव्य रचना 'कानन - कुसुम' है । इसमें सहजता ,स्वाभाविकता एवं प्राकृतिक रूप की रचना देखने को मिलती है । ४९ कविताओं का संकलन भी निकला है , जिसमे कविताओं की प्रकृति के अनुसार ही नामकरण हुआ है । इनकी कविताओं में भक्ति ,प्रकृति ,विनय, और आख्यान आदि प्राप्त होते हैं।पारम्परिक शैली में लिखी गयी कवितायें नयी पद्धतियों को अपनाती हैं। इनके काव्य में नवीनता ,नैतिकता एवं सूक्ष्म निरीक्षण की प्रवृत्ति दिखाई देती है । इनकी कविताओं में परमेश्वर की सत्ता ,सर्वव्यापकता तथा

रहस्यात्मकता के साथ ईश्वर की सार्वकालिक महत्ता को स्वीकारा गया है। काव्य में जहां एक ओर सौंदर्य ,शृंगार, शालीनता ,बिम्बों एवं मर्यादा का स्थान रखा गया है वहीं दूसरी ओर अतुकांत छंद का प्रयोग एवं शिल्प में थोड़ा बदलाव दिखाई देता है।

'करुणालय' को चित्राधार के अंतर्गत सम्मिलित कर लिया गया । बाद में सन १९२८ में इसे पुनः स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान कर दिया गया। करुणालय का प्रकाशन सन १९१३ में हुआ था । यह गीतिनाट्य के रूप में लिखा गया है ,किन्तु कवि का मानना है कि यह दृश्य काव्य है ।

जो-जो कथाएं महाभारत ,रामायण ,ब्रह्मपुराण ,ऋग्वेद ,अथर्ववेद ,देवी भागवत आदि मे बिखरी पड़ी है । आज के परिवेश मे भी पसाद जी के इस कार्य को रामकिशोर मेहता जी आगे बढ़ा रहे है । पसाद जी ने अंध-विश्वास का खंडन भी इसके माध्यम से किया है और नर बलि का विरोध किया है । साथ ही समाज के परिदृश्य को चित्रित किया है। काव्य सर्जन के मूल मे अतुकांत मात्रिक छंद का प्रयोग जैसी भावना भी प्रबल दिखाई देती है । इस कृति का कला -शिल्प शिथिल माना जा सकता है लेकिन आगामी पीढ़ी के काव्य हेतु करुणा के बीज इसमें से ही लिए जाएंगे ,ऐसा कहना अनुचित न होगा ।

' महाराणा का महत्व ' प्रसाद की अगली कृति है। यह आख्यानक रचना है जिसका प्रकाशन सन १९१४ में हुआ इस खंड-काव्य को ऐतिहासिक माना जाता है क्योंकि इसमें महाराणा प्रताप ,रहीम और अकबर को कथानक के रूप में चित्रित किया गया है । 'महाराणा के महत्व' को पांच दृश्यों में बांटा गया है यह अधिक महत्वपूर्ण इसलिए भी है क्योंकि इसमें प्रसाद जी की कलात्मक स्वच्छंदता दिखाई देती है ।इसकी विशेषता है 'अरिल्ल छंद का अतुकांत प्रयोग ।

इसके उपरान्त 'प्रेमपथिक' एक महत्वपूर्ण काव्य कृति है।इसमें कवि का जीवन दर्शन दृष्ट्व्य है। यह कोरा प्रेमकाव्य न होकर कलात्मक शैली का द्योतक है। 'प्रेमपथिक' इदं से अहम् ,जगत और जीवन के समन्वय का काव्य है।प्रसाद जी ने इस रचना के माध्यम से श्रृंगार और प्रेम के आदर्श को चित्रित किया है ।

अब यदि 'झरना' के विषय में कहना हो तो यह प्रसाद जी की नयी भावधारा से जुडी रचना है ।अब तक जो भी काव्य रचना उन्होंने की थी वह वस्तुनिष्ठ थी किन्तु इस रचना के माध्यम से प्रथमतः उन्होंने आत्मनिष्ठा एवं निज को प्रस्तुत किया । आचार्य वाजपेयी जी ने इस रचना को " छायावाद की प्रयोगशाला का प्रथम आविष्कार माना है। इस रचना में कवि की सौंदर्य चेतना ,प्रकृति का उपकरण बन प्रकट हुई है । भाषा पूर्णता लिए हुए है । इसमें लाक्षणिकता एवं व्यंजकता भी है या यूँ कहिये कि परिष्कृत भाषा की परिचायक है यह रचना ।

"आंसू " एक श्रेष्ठ गीत सृष्टि है । इसमें कवि की व्यक्तिगत जीवनानुभूति का परिचय मिलता है। आंसू में कवि ने प्रत्यक्ष रीति से अपने प्रिय के समक्ष निवेदन किया है। इस रचना के माधयम से कवि ने अपनी वेदना को चित्रित किया है । जो प्रेम सदैव संकोच में रहा ,वही आंसुओं की राह से स्वछंद वह निकला। आंसू की हर बून्द कवि की गहन पीड़ा है। इस पीड़ा में करुणा की द्रवणशीलता ,हिम की श्वेतिमा और हिमगिरि की मोहक उठान -सी कल्पना का वैभव है। अनेक स्थानों पर वेदना में डूबा हुआ कवि अपनी अनुभूति को उसके चरम ताप में अंकित करता है । काव्य के अंत में वेदना को एक चिंतन की भूमिका

प्रदान की गयी है ।काव्य में स्वानुभूति का सामान्यीकरण सफलतापूर्वक व्यंजित हुआ है। एक वेदना कैसे व्यापकता को छूती है देखिये–

> सबका निचोड़ लेकर तुम सुख से सूखे जीवन में ।
> बरसो प्रभात हिमकण सा आँसू इस विश्व सदन में।। *

लहर वास्तव में प्रसाद जी की मुक्तक रचना है। लहर कविता प्रसाद जी के जीवन की अनुभूतियों की सरिता से उठी शालीन लहर है। जिस तरह झरना की सफलता आँसू में आयी है, उसी प्रकार आँसू की घनीभूत पीड़ा लहर के प्रगीतों में समायी है । लहर की अधिकाँश कवितायें प्रणय और प्रकृति की भूमि से उपजती है । किन्तु यहां आते-आते दोनों ही भाव शालीन ,गंभीर और प्रौढ हो गये हैं। लहर में सकलित कविताओं को विषय की दृष्टि से पांच भागों में विभाजित किया जा सकता है -

१. आत्मपरक कविताएं
२. आध्यात्मिक कविताएं
३. दार्शनिक कविताएं
४. ऐतिहासिक कविताएं
५. आख्यानात्मक कविताएं

लहर में अतीत की मादक स्मृतियों के बिम्ब हैं ,रूप सौंदर्य के उदात्त एवं मनोरम चित्र यहीं ,आनंद और उल्लास की मधुर लहरी भावोर्मियां है वियोग बेला में अनुभूत मधुर और पीडक कल्पनाएं हैं ,आशा और निराशा की उद्वेलनकारी सृष्टियां हैं , त्याग और मोह की अद्भुत कल्पनाएं हैं और देशानुराग व राष्ट्रीयता की द्योतक भव्य भंगिमाएं हैं । लहर स्नेह अपने भावात्मक पक्ष हेतु ,विविधता ,घनता और अविस्मरणीय सन्दर्भ की योजना हेतु सार्थक एवं समृद्ध रचना मानी जायेगी ।

अंत में जिस रचना की बात होगी वह है कामायनी । कामायनी की कथा -वस्तु १५ सर्गों में बंटी है । प्रथम सर्ग -चिंता ,द्वितीय - आशा ,तीसरा -श्रद्धा ,चौथा- काम सर्ग ,पांचवां -वासना ,छठा -लज्जा ,सातवां -कर्म आठवाँ -ईर्ष्या, नवां -इड़ा ,दसवां- स्वप्न ,ग्यारवां - संघर्ष ,बारहवाँ - निर्वेद ,तेरहवाँ - दर्शन ,चौदहवां -रहस्य ,पन्द्रहवाँ और अंतिम सर्ग है –आनंद ।

> सिंधु -सेज पर धरा वधु ,अब तनिक संकुचित बैठी सी ।
> प्रलय-निशा की हलचल स्मृति मान किये सी ऐंठी सी ।।

कामायनी में मानवीकरण के प्रयोगों की अधिकता है । यही स्थिति विशेषणों की भी है । कामायनी छायावाद का शिखर तो है लेकिन उसमे कुछ दोष भी है जिन्हें देखना आवश्यक है । वैयक्तिकता ,अतिरिक्त कल्पना प्रयोग और शिल्प के क्षेत्र में अधिकाधिक लाक्षणिक प्रयोग इस रचना को जनमानस की पहुँच से बाहर कर देते हैं ।फिर भी प्रसाद जी ने कामायनी लिखकर हिंदी जगत को ऐसी अनमोल कृति प्रदान की है कि जो सृष्टि के विकास की कथा को प्रस्तुत करती है साथ ही आधुनिक जीवन की विषमताओं को भी स्पष्ट करती है इतना ही नहीं उनसे निकलने का मार्ग भी बताती है ।

अंत में हम यह कह सकते हैं कि कर्म को विशेष महत्व दिया है –

> नियति चलाती कर्म चक्र यह ,तृष्णा जनित ममत्व वासना ।
> पाणि-पादमय पंचभूत सी यहाँ हो रही है उपासना ।।

कर्मचक्र सा घूम रहा है, ये गोलक बन नियति प्रेरणा ।
सबके पीछे लगी हुई है, कोई व्याकुल नयी एषणा ॥

प्रसाद जी शुद्ध आनंदवादी कवि थे । उनकी प्रारंभिक रचनाओं से लेकर अंतिम रचनाओं तक में इसी आनंदवाद की झलक दिखाई देती है। वास्तव में आनंद भूमिका पर पहुंचना उनका प्रमुख लक्ष्य था हमारे अनूठे साहित्य कवि जयशंकर प्रसाद जी इसी आनंदवाद के समर्थक है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

१.कामायनी विमर्श --डॉ हरिचरण शर्मा
२.हिंदी साहित्य का इतिहास --डॉ. नगेन्द्र
३.विकिपीडिया
४.संकल्प
५.विमर्श
६.आजकल
७.कामायनी --जयशंकर प्रसाद
८ कवि प्रसाद की काव्य साधना --रामनाथ ' सुमन '